NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2019

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER II

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours 70 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines.

IEB Copyright © 2019

भाग क

निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो पर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

प्रश्न १

कविता

१.१ **माता**

१.१.१ माता क्यों दुखी है ?

माता दुखी है । यह विधाता से पूछती है तू मेरे दिल के बारे में क्या जानेगा । मैंने भगवान की मूर्ति को बड़े प्रेम से सजाया उसो भगवान को मैने लाचार होकर सौंप । देया दोंनो नाचते हुए आए । कृष्ण और मेरा लाल । मॉ कतती है मैं पहले अपने बच्चे को गोद में लुंगी जिसे मैंने जन्म दिया है । वह अपने पुत्रसे कहती है कि सारी जिन्दगी उसने सुख का त्याग किया । गरीबी सही और अपने यौवन जीवन में त्याग ही त्याग किया है ।

१.१.२ "माता" कविता में महत्वपूर्ण विचार क्या है ?

मेरा यह पुत्र मेरा जीवन मेरा सुख धन दौलत है और मेरे यौवन की यादें है । मेरे पुर्व जन्म का बचपन आज मुझे खेल रहा है । मेरे दिल का टुकड़ा मुझे ढ़केल रहा है । इसे देखकर लगता है कि जैसे एक बार फिर से मेरे जीवन का नूतन प्रारंभ हो रहा हो । यह अत्यन्त सजीव प्राणों से युक्त । तेजोमय तथा छोटी सी मस्तनी वस्तु जैसे हम पति पत्नी दोनों की एक सम्मिलित मधुर मूर्ति विधाता ने बना दी हो । मेरा यह नन्हा बच्चा मेरा ही छोटा रूप छोटी प्रतिमा है और मैं अपनी ही इस छोटी प्रतिमा पर अपने आपको निछावर क्यों कर देती हूँ ।

१.१.३ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में संक्षेप व्याख्या कीजिए ।

(क) *"मुझसे मेरे पुनर्जन्म का बचपन खेल रहा है "* ।

मॉ को बचपने के दिन याद आ रहे हैं । उसका बेटा हॅस कर ढकेल रहा है । वह उन दिनों की याद कर रही है । वह जवान थी और उसका बच्चा उसके साथ साथ बढ़ रहा था ।जिन सीड़ियों पर दोनों उतरते थे । वह अब हॅसते हुए उपर फिर से रहा है ।

(ख) *यह मेरा मनमोकन है । मुरलीधर हे गिरिधर है ।*

मॉ यहॉ अनेक रूपों से पुकारी गई है । विश्व को बनाने वाली विश्व को जिलनेवाली । विश्व को चलाने वाली । जग की मॉ । जग को जन्मदेनेवाली पुन्य और पवित्र है । श्री कृष्ण उसके मन को मोहनने वलिा उसके घर की ज्योति और मुरली के गीत से सबको नछानेवाले नटवर है । माता कहती है वह परमात्मा के दिश्ए हुए दुखों को अपने सिर पर बोझ उठानेवाली है । वह लोंगों के प्राण को लेनेवाली एक गरीबनी है । चाहे मेरा नाम हो या मैं बडनाम हो जाऊॅ । यह मुझ व्याकुल स्त्री की कुरबानी का गाना है । मैं कोई योगिनी जो तपस्या करने बैठी हूॅ ।

IEB Copyright © 2019

१.२ कर्मवीर

१.२.१ " कर्मवीर " कविता के आधार पर इस शब्द का अर्थ विस्तार पूर्वक समझाइए ?

कवि कहता है कि जब एक कर्मवीर किसी काम में व्यस्त हो जाता हे तो सामने आती बाधा जैसे समुद्र की उठती नहरेम उसको विवलित और चिंतित नहीं करतीं । उसमें अगस्त ऋषि के स्मान शकित उत्पन्न हो जाति है । वह इला साहस से भर जाता हे कि वह समुद्र के पानी को भी पी जाता है ।

१.२.२ *"कर्मवीर " का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।*

कर्मवीर अपनी बुध्दि के बल पर सब प्रकार के कारीगरी में प्रवीण हो जाते हैं । और तरह के आष्किार करते हैं ।दपिकों के कतारों को बाद दामिनी पंखाा झेलकर ठण्द वातावरण पैदा करती हैं ।

१.२.३ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में संक्षेप व्याख्या कीजिए ।

(क) यत्न कर लोग रत्न किटने ।
कीड़ी में से पाते हें ।
फल लगा उकठे कॉटों में
धूल में फूल खिलते हैं ॥

कवि कहता है कि कोई भी काम आसानी से सफल नहीं होता ।उसके लिए बहुत परिश्रम करना पडम्ता है । जिस प्रकार अनेक प्रकार के रत्न कीचड़ में पाये जाते हैं वह आसानी से नहीं मिलता । कई पल काटों के बीच लगते हैं । ओर सुन्दर फूल धूल में खिलते हैं ।

प्रश्न २

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किन्हीं **एक** के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए

२.१ **कहानी : बालक श्रवण कुमार** - निम्नलिखित पर टिप्पणी कीजिए :

"मुनि कुमार श्रवण कितना दुख सह कर अपने माँ बाप की सेवा करता है।"

श्रवण कुमार का नाम इतिहास में मातृभक्ति और पितृभक्ति के लिए अमर रहेगा। उसके माँ-बाप बूढ़े थे, अंधे थे। वह दिन भर उनकी सेवा करता। वह कभी काम के कारण शिकायत न करता।

उसने विवाह किया। उसकी पत्नी उसके बूढे माता.पिता का तिरस्कार करती थी। वह नाराज़ होकर घर छोड़कर चली जाती है। फिर भी श्रवण पत्नी के लिए माँ-बाप को नहीं छोड़ता।

एक दिन श्रवण के माँ-बाप तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा प्रकट करते हैं। उन दिनों रेल या बस नहीं थी। देखो कैसे श्रवण उन्हें तीर्थ पर ले जाता है।,

बहुत समय पहले श्रवण कुमार नाम का एक बालक था। श्रवण के माता-पिता अंधे थे। श्रवण अपने माता-पिता को बहुत प्यार करता। उसकी माँ ने बहुत कष्ट उठाकर श्रवण को पाला था। जैसे-जैसे श्रवण बड़ा होता गया, अपने माता-पिता के कामों में अधिक से अधिक मदद करता।

सुबह उठकर श्रवण माता-पिता के लिए नदी से पानी भरकर लाता। जंगल से लकड़ियाँ लाता। चूल्हा जलाकर खाना बनाता। माँ उसे मना करतीं-

"बेटा श्रवण, तू हमारे लिए इतनी मेहनत क्यों करता है? भोजन तो मैं बना सकती हूँ। इतना काम करके तू थक जाएगा।"

"नहीं माँ, तुम्हारे और पिता जी का काम करने में मुझे जरा भी थकान नहीं होती। मुझे आनंद मिलता है। तुम देख नहीं सकतीं। रोटी बनाते हुए, तुम्हारे हाथ जल जाएँगे।"

"हे भगवान! हमारे श्रवण जैसा बेटा हर माँ-बाप को मिले। उसे हमारा कितना खयाल है।" माता-पिता श्रवण को आशीर्वाद देते न थकते।

श्रवण के माता-पिता रोज भगवान की पूजा करते। श्रवण उनकी पूजा के लिए फूल लाता, बैठने के लिए आसन बिछाता। माता-पिता के साथ श्रवण भी पूजा करता।

मता-पिता की सेवा करता श्रवण बड़ा होता गया। घर के काम पूरे कर, श्रवण बाहर काम करने जाता। अब उसके माता-पिता को काम नहीं करना होता।

श्रवण के माता-पिता को बेटे के विवाह की चिंता हुई। अंत में एक लड़की के साथ श्रवण कुमार का विवाह हो गया। श्रवण की पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं था। वह आलसी और स्वार्थी स्त्री थी। उसे श्रवण के अंधे माता-पिता की सेवा करना अच्छा नहीं लगता। अक्सर माता-पिता को लेकर वह श्रवण से झगड़ा करती। वह अपने लिए अच्छा भोजन बनाती, पर श्रवण के माता-पिता को रूखा-सूखा खाना देती। एक दिन श्रवण ने देखा उसके माता-पिता नमक से रोटी खा रहे हैं और उसकी पत्नी पूरी और मालपुए का भोजन कर रही है। श्रवण को क्रोध आ गया।

"यह क्या माँ-पिता जी को रूखी रोटी और खुद पकवान खाती हो। तुम्हें शर्म नहीं आती?"

"उन्हें खाना देती हूँ, यही क्या कम है। मैं किसी की दासी नहीं हूँ।" श्रवण की पत्नी ने तमक कर जवाब दिया।

"क्या वे तुम्हारे माता-पिता नहीं हैं? बड़ों के साथ ऐसा बरताव क्या ठीक बात है?"

"नहीं, वे मेरे कोई नहीं लगते। मैं उनकी सेवा करने नहीं आई हूँ। मैं अभी यहाँ नहीं रह सकती। मैं जा रही हूँ। तुम चाहो तो मेरे साथ आ सकते हो। नहीं तो तुम इनके साथ बने रहो। मैं चली।"

ण की पत्नी घर छोड़कर जाने लगी। बहुत समझाने पर भी वह नहीं रूकी न श्रवण की बात मानी, न फिर कभी वापस आई। अपना दुख भुलाकर श्रवण फिर बूढे माता-पिता की सेवा में जुट गया। काम पर जाने के पहले वह उनके सारे काम पूरे करके जाता। घर लौटकर उनकी सेवा करता। रात में उनके पैर दबाता। माता-पिता के सोने के बाद खुद सोता।

एक दिन श्रवण के माता-पिता ने कहा-

"बेटा, तुमने हमारी सारी इच्छाएँ पूरी की हैं। अब एक इच्छा बाकी रह गई है।"

"कौन-सी इच्छा माँ? क्या चाहते हैं पिता जी? आप आज्ञा दीजिए। प्राण रहते आपकी इच्छा पूरी करूँगा।"

"हमारी उमर हो गई अब हम भगवान के भजन के लिए तीर्थ. यात्रा पर जाना चाहते हैं बेटा। शायद भगवान के चरणों में हमें शांति मिले।"

श्रवण सोच में पड़ गया। उन दिनों आज की तरह बस या रेलगाड़ियाँ नहीं थी। वे लोग ज्यादा चल भी नहीं सकते थे। माता-पिता की इच्छा कैसे पूरी करूँ, यह बात सोचते-सोचते श्रवण को एक उपाय सूझ गया। श्रवण ने दो बड़ी-बड़ी टोकरियाँ लीं। उन्हें एक मजबूत लाठी के दोनों सिरों पर रस्सी से बाँधकर लटका दिया। इस तरह एक बड़ा काँवर बन गया। फिर उसने माता-पिता को गोद में उठाकर एक-एक टोकरी में बिठा दिया। लाठी कंधे पर टाँगकर श्रवण माता-पिता को तीर्थ यात्रा कराने चल पड़ा।

श्रवण एक-एक कर उन्हें कई तीर्थ स्थानों पर ले जाता है। वे लोग गया, काशी, प्रयाग सब जगह गए। माता-पिता देख नहीं सकते थे इसलिए श्रवण उन्हें तीर्थ के बारे में सारी बातें सुनाता। माता-पिता बहुत प्रसन्न थे। एक दिन माँ ने कहा-"बेटा श्रवण, हम अंधों के लिए तुम आँखें बन गए हो। तुम्हारे मुँह से तीर्थ के बारे में सुनकर हमें लगता है, हमने अपनी आँखों से भगवान को देख लिया है।"

"हाँ बेटा, तुम्हारे जैसा बेटा पाकर, हमारा जीवन धन्य हुआ। हमारा बोझ उठाते तुम थक जाते हो, पर कभी उफ़ नहीं करते।" पिता ने भी श्रवण को आशीर्वाद दिया।

"ऐसा न कहें पिता जी, माता-पिता बच्चों पर कभी बोझ नहीं होते। यह तो मेरा कर्तव्य है। आप मेरी चिंता न करें।"

एक दोपहर श्रवण और उसके माता-पिता अयोध्या के पास एक जंगल में विश्राम कर रहे थे। माँ को प्यास लगी। उन्होंने श्रवण से कहा-

बेटा, क्या यहाँ आसपास पानी मिलेगा? धूप के कारण प्यास लग रही है।

अथवा

२.२ कहानी : बालक श्रवण कुमार :

२.२.१ अयोध्या में किसके राज्य थे ?

राजा दशरथ का राज्य थे

२.२.२ श्रवन कुमार अपने माता पिता के लिए क्या करते थे ।

उसके माँ-बाप बूढ़े थे, अंधे थे। वह दिन भर उनकी सेवा करता। वह कभी काम के कारण शिकायत न करता।उसने विवाह किया। उसकी पत्नी उसके बूढ़े माता.पिता का तिरस्कार करती थी। वह नाराज़ होकर घर छोड़कर चली जाती है। फिर भी श्रवण पत्नी के लिए माँ-बाप को नहीं छोड़ता।एक दिन श्रवण के माँ-बाप तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा प्रकट करते हैं। उन दिनों रेल या बस नहीं थी।

२.२.३ मॉ बाप की क्या इच्छा थे?

श्रवण एक-एक कर उन्हें कई तीर्थ स्थानों पर ले जाता है। वे लोग गया, काशी, प्रयाग सब जगह गए। माता-पिता देख नहीं सकते थे इसलिए श्रवण उन्हें तीर्थ के बारे में सारी बातें सुनाता। माता-पिता बहुत प्रसन्न थे। एक दिन माँ ने कहा-"बेटा श्रवण, हम अंधों के लिए तुम आँखें बन गए हो। तुम्हारे मुँह से तीर्थ के बारे में सुनकर हमें लगता है, हमने अपनी आँखों से भगवान को देख लिया है।" एक दोपहर श्रवण और उसके माता-पिता अयोध्या के पास एक जंगल में विश्राम कर रहे थे

२.२.४ वे नदी के किनरे क्यों गए ?

माँ को प्यास लगी। उन्होंने श्रवण से कहा-बेटा, क्या यहाँ आसपास पानी मिलेगा? धूप के कारण प्यास लग रही है।"हाँ, माँ। पास ही नदी बह रही है। मैं जल लेकर आता हूँ।"श्रवण कमंडल लेकर पानी लाने चला गया।

२.२.५ राजा दशरथ वहॉ क्यो आया ?

अयोध्या के राजा दशरथ को शिकार खेलने का शौक था। वे भी जंगल में शिकार खेलने आए हुए थे। श्रवण ने जल भरने के लिए कमंडल को पानी में डुबोया।

२.२.६ जब राजा दशरथ नदी को पहुंचे क्या हुआ ?
इस दृश्य को अपने शब्दों में सम्झाइए ।

बर्तन मे पानी भरने की अवाज़ सुनकर राजा दशरथ को लगा कोई जानवर पानी पानी पीने आया है। राजा दशरथ आवाज सुनकर, अचूक निशाना लगा सकते थे। आवाज के आधार पर उन्होंने तीर मारा। तीर सीधा श्रवण के सीने में जा लगा। श्रवण के मुँह से 'आह' निकल गई।

२.२.७ इस कहानी का अन्त में क्या हुआ ? वर्णन कीजिए ।

राजन्, जंगल में मेरे माता-पिता प्यासे बैठे हैं। आप जल ले जाकर उनकी प्यास बुझा दीजिए। मेरे विषय में उन्हें कुछ न बताइएगा। यही मेरी विनती है।" इतना कहते-कहते श्रवण ने प्राण त्याग दिए।दुखी हृदय से राजा दशरथ, जल लेकर श्रवण के माता-पिता के पास पहुँचे। श्रवण के माता-पिता अपने पुत्र के पैरों की आहट अच्छी तरह पहचानते थे। राजा के पैरों की आहट सुन वे चैंक गए।"कौन है? हमारा बेटा श्रवण कहाँ है?"बिना उत्तर दिए राजा ने जल से भरा कमंडल आगे कर, उन्हें पानी पिलाना चाहा, पर श्रवण की माँ चीख पड़ी- "तुम बोलते क्यों नहीं, बताओ हमारा बेटा कहाँ है?""माँ, अनजाने में मेरा चलाया बाण श्रवण के सीने में लग गया। उसने मुझे आपको पानी पिलाने भेजा है। मुझे क्षमा कर दीजिए।" राजा का गला भर आया।"हाँ श्रवण, हाय मेरा बेटा" माँ चीत्कार कर उठी। बेटे का नाम रो-रोकर लेते हुए, दोनों ने प्राण त्याग दिए। पानी को उन्होंने हाथ भी नहीं लगाया। प्यासे ही उन्होंने इस संसार से विदा ले ली।

प्रश्न ३

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किन्हीं **एक** के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए।

३.१ कहानी : सत्ती

३.१.१ चिंता देवी कौन थी ?

मंगलवार को सहस्त्रों स्त्री पुरुष चिंतादेवी की पूजा करने आते है। उस दिन यह निर्जन स्थान सुहावने गीतों से गूँज उठता है। टीले और टीकरे स्मणियों के रंग बिरंगे वस्त्रों से सुशोभित हो जते है।

३.१.२ बुदेंलखंड में इनकी बाल अवस्ता कैसे हुइ ?

चिंता का बाल्यकाल पिता के साथ समर भुमि में कटा। बाप उसे किसी स्वोह या वृक्ष की आड़ में छिपाकर मैदान में चला जाता। चिंता निशंक भाव से बैठी हुई मिट्टी के किले बनाती और बिगाड़ती। उसके घरौंदे किले होते थे। उसकी गुड़ियॉ ओढ़नी न ओढ़नी थी। वह सिपाहियों के गुड्डे बनाती और उन्हें रणक्षेत्र में खड़ा करती थी। निर्जन स्थान में भूखी प्यासी रात रात भर बैठी रह जाती।

३.१.३ चिंता देवी का चरित्र चित्रन अपने शब्दों में कीजिए ?

यमुना-तट पर कालपी एक छोटा-सा नगर है। चिंता उसी नगर के एक वीर बुंदेले की बेटी थी। उसकी माता उसकी बाल्यावस्था में ही परलोक सिधार चुकी थीं। उसके पालन-पोषण का भार पिता पर पड़ा। वह संग्राम का समय था, योद्धाओं को कमर खोलने की भी फ़ुरसत न मिलती थी, वे घोड़े की पीठ पर भोजन करते और ज़ीन ही पर झपकियाँ ले लेते थे। चिंता का बाल्यकाल पिता के साथ समर-भूमि में कटा। बाप उसे किसी खोह या वृक्ष की आड़ में छिपाकर मैदान में चला जाता। चिंता निश्शंक भाव से बैठी हुई मिट्टी के क़िले बनाती और बिगाड़ती। उसके घरौंदे क़िले होते थे; उसकी गुड़ियाँ ओढ़नी न ओढ़ती थीं। वह सिपाहियों के गुड्डे बनाती और उन्हें रणक्षेत्र में खड़ा करती थी। कभी-कभी उसका पिता संध्या-समय भी न लौटता; पर चिंता को भय छू तक न गया था। निर्जन स्थान में भूखी-प्यासी रात-रात-भर बैठी रह जाती। उसने नेवले

३.१.४ रत्न सिंह जैसे वीर में अचानक क्या परिवर्तन आया और क्यों?

इन्हीं योध्दाओ में रत्नसिंह नाम का एक राजपूत युवक भी था। यों तो चिंता के सैनिकों में सभी तलवार के धनी थे। बात पर जान देनेवाले। उसके इशारे पर आग में आग में कूदनेवाले। उसकी आज्ञा पाकर एक बार आकाश के तारे तोड़ लाने को भी चल पड़ते। किंतु रत्नसिह सबसे बढ़ा हुआ था।

३.१.५ आपके विचार में बुदेलखंड के लोग आज भी चिंतादेवी के मन्दिर में क्यों पूजा करने जाते हैं ?

सती को भारत में एक हिंदू प्रथा के रूप में वर्णित किया गया है जिसमें विधवा को उसके मृत पति के पयरे पर राख में जला दिया गया था। मूल रूप से सती की प्रथा को एक स्वैच्छिक हिंदू अधिनियम माना गया था जिसमें महिला स्वैच्छिक अपनी मृत्यु के बाद अपने पति के साथ अपना जीवन समाप्त करने का फैसला करती है। लेकिन कई ऐसी घटनाएं थीं जिनमें महिलाएं सती करने को मजबूर हुईं थीं, कभी-कभी उन्हें पेंट करने की इच्छा के मुकाबले भी घसीटा।
यद्यपि सती को एक हिंदू प्रथा माना जाता है, लेकिन हिंदू धार्मिक साहित्य में सती के रूप में जाने वाली महिलाओं ने अपने मृत पति के चिड़िया पर आत्महत्या नहीं की थी। सती के रूप में जाने वाली पहली महिला भगवान शिव की पत्नी थी उसने अपने पिता के खिलाफ विरोध के रूप में खुद को आग में जला दिया, जिसने शिव को सम्मान नहीं दिया था, जिसने उन्हें सम्मान दिया था, खुद को जलाने के दौरान उन्होंने शिव की नई पत्नी के रूप में पुनर्जन्म करने की प्रार्थना की, जो वह बन गई और उनका नया अवतार पार्वती

३.१.६ अंतिम दृश्य को अपने शब्दों मे चर्चा कीजिए

चिंता से आवाज आयी " तुम्हारा नाम रत्नसिंह है । पर तुम मेरे रत्नसिंह नहीं हो । "मेरे पति ने वीर गति पायी । चिंता स्पष्ट स्वर में बोली " खूब पहचानती हूँ । तुम मेरे रत्नसिंह नहीं । मेरा रत्नसिंह सच्चा शूर था । वह आत्मरक्षा के लिए । इस तुच्छ देह को बचाने के लिए अपने क्षत्रिय धर्म का परित्याग न कर सकता था ।

अथवा

३.२ **कहानी** ः सत्ती ः
किस के कारण चिंता देवी का नाम आज तक सम्मान के साथ लेते है ? इस पर वेस्तार पूवर्क समझाइए ।

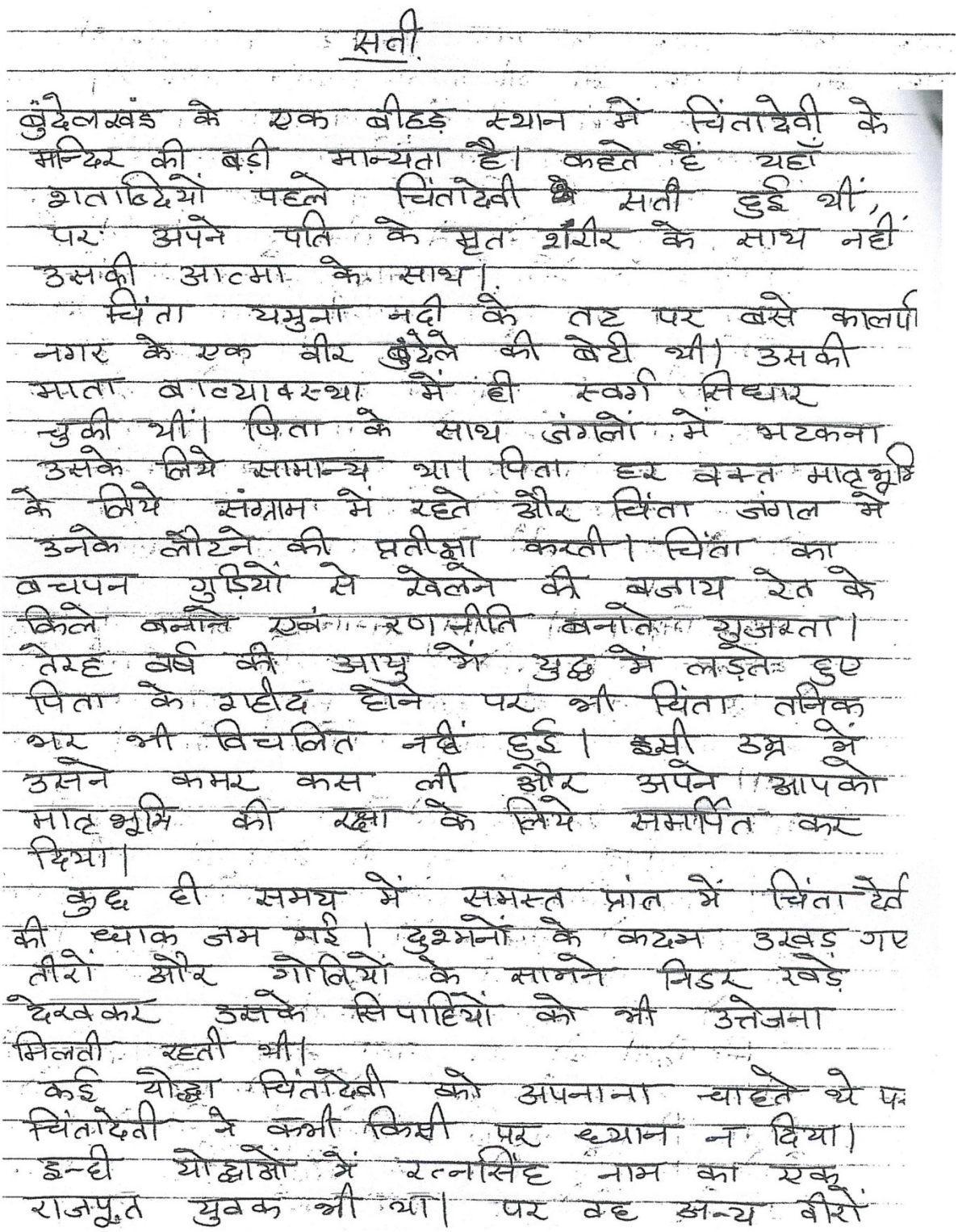

सती

बुंदेलखंड के एक बीहड़ स्थान में चिंतादेवी के मन्दिर की बड़ी मान्यता है। कहते हैं यहाँ शताब्दियों पहले चिंतादेवी सती हुई थीं, पर अपने पति के मृत शरीर के साथ नहीं उसकी आत्मा के साथ।

चिंता यमुना नदी के तट पर बसे कालपी नगर के एक वीर बुंदेले की बेटी थी। उसकी माता बाल्यावस्था में ही स्वर्ग सिधार चुकी थीं। पिता के साथ जंगलों में भटकना उसके लिये सामान्य था। पिता हर वक्त मातृभूमि के लिये संग्राम में रहते और चिंता जंगल में उनके लौटने की प्रतीक्षा करती। चिंता का बचपन गुड़ियों से खेलने की बजाय रेत के किले बनाते एवं रणनीति बनाते गुजरता। तेरह वर्ष की आयु में युद्ध में लड़ते हुए पिता के शहीद होने पर भी चिंता तनिक भर भी विचलित नहीं हुई। इसी उम्र में उसने कमर कस ली और अपने आपको मातृभूमि की रक्षा के लिये समर्पित कर दिया।

कुछ ही समय में समस्त प्रांत में चिंता देवी की धाक जम गई। दुश्मनों के कदम उखड़ गए तीरों और गोलियों के सामने निडर खड़े देखकर उसके सिपाहियों को भी उत्तेजना मिलती रहती थी।

कई योद्धा चिंतादेवी को अपनाना चाहते थे पर चिंतादेवी ने कभी किसी पर ध्यान न दिया। इन्हीं योद्धाओं में रत्नसिंह नाम का एक राजपूत युवक भी था। पर वह अन्य वीरों

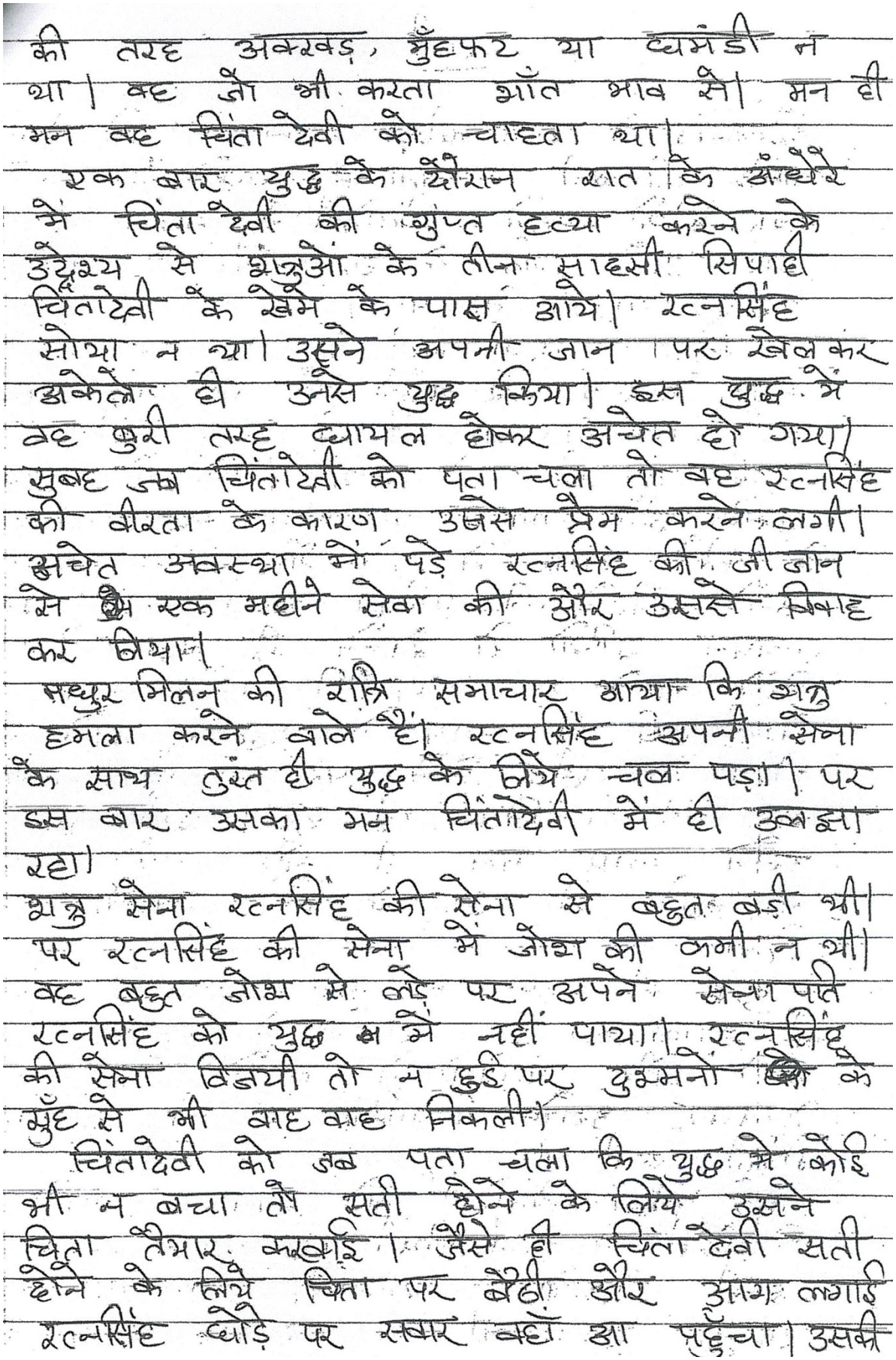

की तरह अक्खड़, मुँहफट या घमंडी न था। वह जो भी करता शांत भाव से। मन ही मन वह चिंतादेवी को चाहता था।

एक बार युद्ध के दौरान रात के अंधेरे में चिंतादेवी की गुप्त हत्या करने के उद्देश्य से शत्रुओं के तीन साहसी सिपाही चिंतादेवी के खेमे के पास आये। रत्नसिंह सोया न था। उसने अपनी जान पर खेलकर अकेले ही उनसे युद्ध किया। इस युद्ध में वह पूरी तरह घायल होकर अचेत हो गया। सुबह जब चिंतादेवी को पता चला तो वह रत्नसिंह की वीरता के कारण उनसे प्रेम करने लगी। अचेत अवस्था में पड़े रत्नसिंह की जी जान से एक महीने सेवा की और उससे विवाह कर लिया।

मधुर मिलन की रात्रि समाचार आया कि शत्रु हमला करने वाले हैं। रत्नसिंह अपनी सेना के साथ तुरंत ही युद्ध के लिये चल पड़ा। पर इस बार उसका मन चिंतादेवी में ही उलझा रहा।

शत्रु सेना रत्नसिंह की सेना से बहुत बड़ी थी। पर रत्नसिंह की सेना में जोश की कमी न थी। वह बहुत जोश से लड़े पर अपने सेनापति रत्नसिंह को युद्ध क्षेत्र में नहीं पाया। रत्नसिंह की सेना विजयी तो न हुई पर दुश्मनों के मुँह से भी वाह वाह निकली।

चिंतादेवी को जब पता चला कि युद्ध में कोई भी न बचा तो सती होने के लिये उसने चिता तैयार करवाई। जैसे ही चिंतादेवी सती होने के लिये चिता पर बैठी और आग लगाई रत्नसिंह घोड़े पर सवार वहाँ आ पहुँचा। उसकी

प्रश्न ४

निम्नलिखित नाटक मेल मिलाप में से किन्हीं एक के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए

४.१ एकांकी "मेल मिलाप" नाम पर चर्चा कीजिए ।

जीवन में परिवारों गलतफहमी है। लेकिन समय के साथ इन गलतफहमियों को सुलझा लिया जाता है। भाइयों अंत में एक साथ आते हैं। अपनी पत्नियों की मदद से उन्हें समर्थक सक्रिय हो में एक प्रमुख भूमिका निभानी

४.२ "मेल मिलाप" के आधार पर निम्नलिखित पात्रों का चरित्र चित्रण कीजिए ?

४.२.१ किशनसिंह

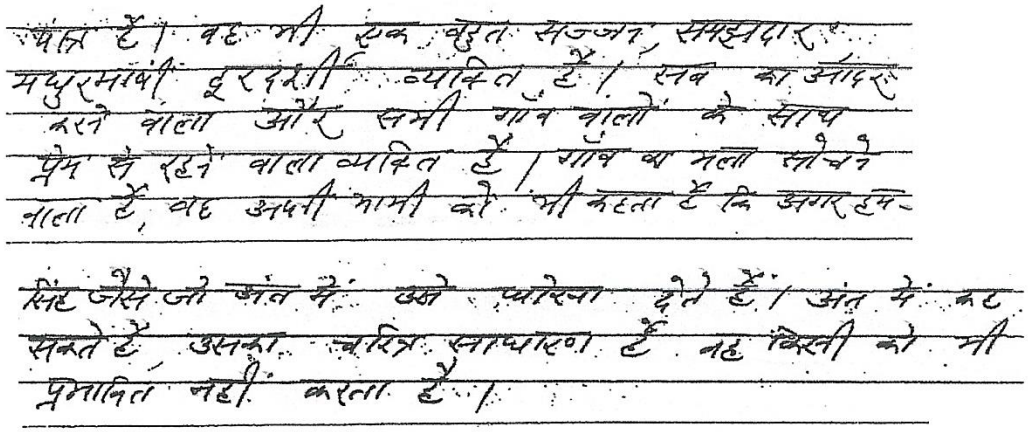

४.२.२ मंगलसिंह

मंगल सिंह बिरादरी और गॉव वालों के बारे में नहीं साचता । उसके विचार में गॉव वालों के सहयोग के बिना भी वह सब कुछ कर स्कता है । इससे उसके अहंभाव का परिचय होता है मंगल सिंह का औरतों के विषय में विचार है कि वे चार अक्षर पढ़ लिख कर क्या जान्ती है । दूसरों को व्याखयान देने लगती है । यह विचार मंगसिंह ने अपनी पत्नी राधा के समक्ष उस समय प्रकट किया जब वह मंगल सिंह को अपसी मनमुटाव भुलाकर किशन कि बेटी की शादी में सामिल होने के लिए कहती है ।

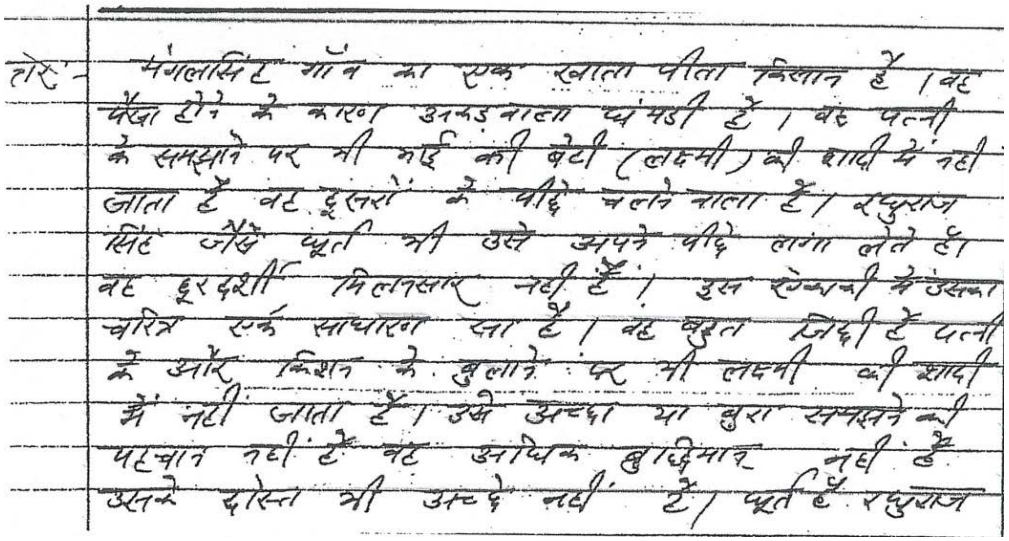

४.३ निम्न लिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए ?

(क) " इसी प्रकार हम आगे बढ़ते चले गए तो एक दिन गॉव स्वर्ग बन जाएंगे "

यह वाक्य किशनसिंह ने राधा ः अपनी भाभी को कहा है जब वह उसके घर लड़की को शगुन देने देने आती हैं । किशन गॉव का हितेषी है । इसलिए उसने कहा कि हम तरक्की करते आगे बढ़ेगे तो गांव बहुत सुन्दर वन जाएंगे ।

(ख) "तुम गॉव के नाम पर बट्टा लगाते हो "

यह वाक्य किशन सिंह ने कहा है जब रघुराज सिंह और हीरा पंडित में कहासनी हो जती है । वह रघूराज सिंह को कहता हैं कि तुम गॉव वाले के लिए एक कलांक और सभी गॉव वालों का नाम खराब कर रहे हो और इसलिए तुम गॉव छोड़ कर चले जाओ ।

अथवा

४.४ "*मुसी बत के वक्त पर अगर आदमी आदमी का साथ न दें* "..... इस के आधार पर मेल मिलाप एकांकी कथा को विस्तार पूर्वक संझाइए । ?

किशनसिंह की बेटी लक्ष्मी का विवाह बड़ी धूमधाम से और आनन्द के साथ सम्पन्न हो गया। उनकी व्यवस्था और मेल-मिलाप की लड़के वालों ने भी बहुत तारीफ की। गाँव के पुरोहित हीरा ने यह समाचार मंगलसिंह और रघुराजसिंह को दिये तो वे दोनों ईर्ष्या-द्वेष से जल-भुन गये। रघुराजसिंह तो हीरा के साथ लड़ने को भी तैयार हो गये और किशनसिंह ने भी हीरा का साथ दिया, किन्तु मंगलसिंह ने बीच बचाव किया और मारामारी होते-होते रुक गई। इस प्रसंग के बाद मंगलसिंह और रघुराजसिंह अधिक समीप आ गये। उन दोनों ने मिलकर पासवाले शहर में लकड़ी का कारखाना खोलने का निश्चय किया। रघुराजसिंह के पास पैसा नहीं था, अतः मंगलसिंह ने अपना सारा धन उसमें लगा दिया। उसी वर्ष मंगलसिंह की बेटी सीता का विवाह निश्चित हुआ। अब मंगलसिंह की पत्नी राधा विवाह का सामान जुटाने के लिए पैसा माँगने लगी। मंगलसिंह कुछ दिन तो अपनी पत्नी को आश्वासन देता रहा किन्तु पैसा नहीं आया। कुछ दिन बाद एक दिन मंगलसिंह के बेटे रामू ने समाचार दिया कि उनके शहर वाले लकड़ी के कारखाने में आग लग गई और सब कुछ जलकर राख हो गया। उस समय रघुराजसिंह शराब पीकर वहीं सोया था और दो दिन पहिले वह उस कारखाने से बहुत सामान निकाल कर ले गया था। यह सब समाचार सुनकर राधा और मंगलसिंह दोनों ही अत्यंत निराश हो गये परन्तु दोनों लाचार थे।

गाँव के पुरोहित हीरा ने यह समाचार मंगल के चचेरे भाई किशन को दिये। किशन की पत्नी चन्दो को भी यह समाचार मिला। दोनों पति-पत्नी ने मिलकर विचार किया और सोचा कि भाई की बेटी पुत्री के समान ही है और बेटी का व्याह समय पर होना ही चाहिए। यह निश्चय करके किशनसिंह मंगल के घर गया और उसे जो हो गया, उस पर आँसू न बहाने को समझाया। उसने यह भी कहा कि सीता की शादी नहीं रुकेगी। मुसीबत के वक्त आदमी ही आदमी का साथ देता है। मैं सीता के विवाह का सारा खर्च दूँगा और समधियों से जाकर कहूँगा कि बारात जितनी कम ला सकें अच्छा है। मंगलसिंह ने राधा को भी यह समाचार सुनाया तथा किसनसिंह के सामने एक अपराधी की भाँति खड़े होकर उससे क्षमा माँगी। किशनसिंह अपनी बैलगाड़ी जोतकर ले आये और राधा को लेकर विवाह का सामान खरीद ने शहर जा पहुँचे। इस प्रकार दोनों परिवारों में मेल-मिलाप हो गया।

मंगलसिंह और किशनसिंह आपस में चचेरे भाई थे। दोनों गाँव के खाते-पीते अच्छे किसान थे। दोनों के घर भी पास-पास ही थे, किन्तु इन दोनों घरों में बाप दादा के जमाने से झगड़ा चला आ रहा था। उन दोनों को तो उस झगड़े के मूल का पता भी नहीं था, किन्तु दोनों ही उस झगड़े को बढ़ाये जा रहे थे। मंगलसिंह की पत्नी इस झगड़े को भुलाकर दोनों परिवारों में एकता स्थापित करने को उत्सुक थी। तभी किशनसिंह की बेटी के विवाह का अवसर आ गया। किशनसिंह स्वयं मंगलसिंह के घर जाकर उसे विवाह में शामिल होने का आमंत्रण दे आया। उसकी पत्नी राधाने भी उससे विवाह में शामिल होने का आग्रह किया। मंगलसिंह के दोस्त रघुराजसिंह का स्वार्थ इसमें था कि वे दोनों भाई आपस में न मिलें इसलिए वह निरन्तर किशनसिंह के विरुद्ध मंगलसिंह के कान भरता रहता है। राधा के बहुत समझाने पर भी मंगलसिंह किशनसिंह की बेटी के विवाह में नही गया। उसका विरोध होने पर भी राधा चुपचाप विवाह में गई और अपनी भतीजी को विवाह की भेंट भी दे आई। उसने किशनसिंह की बेटी लक्ष्मी को दो जोड़े कपड़े और कुछ रुपये देकर अपने कर्तव्य का पालन किया। पति के विरोध के कारण वह स्वयं उस विवाह में उपस्थित न हो सकी।

Total: 70 marks

IEB Copyright © 2019